

24. आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता : एक परिचयात्मक अध्ययन

डॉ. यशवन्त यादव

(सहायक आचार्य, इतिहास विभाग)

सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु,

सिद्धार्थनगर, उ0प्र0

Email. dryashwantyadav@suksn.edu.in

सारांश

मानव चिंतन की यात्रा में आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता दो महत्वपूर्ण पड़ाव हैं। दोनों केवल समय के कालखंड नहीं हैं, बल्कि सोचने, देखने और जीने की पद्धतियाँ हैं। एक जहाँ तर्क, विज्ञान और प्रगति पर भरोसा करती है, वहीं दूसरी उसी भरोसे पर सवाल उठाती है। आधुनिकता की शुरुआत 16वीं-17वीं शताब्दी में यूरोप में पुनर्जागरण, वैज्ञानिक क्रांति और प्रबोधन काल से मानी जाती है। आधुनिकता का संबंध एक विशेष प्रकार के अनुभव से, एक विशेष प्रकार की संस्कृति से है, जिसमें आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक गठजोड़ होते हैं जो इसे एक अलग पहचान देते हैं। आधुनिकता में सांस्कृतिक एकाधिकार है। कई भाषाएं, जातियाँ और सांस्कृतिक क्षेत्र हैं। आधुनिकता में लचीलेपन के साथ यह सदैव नए आविष्कारों में लगा रहता है, इस काल का सौन्दर्य बोध अत्यंत परिष्कृत है, इसकी पॉप संस्कृति जादुई है। इसमें खान-पान, रहन-सहन सभी में देखा जा सकता है। यह आधुनिकता एक तरह से औद्योगिक अर्थव्यवस्था का आईना है। जब यह आधुनिकता अत्यधिक विकसित हो जाती है तो इसे उत्तर आधुनिकता कहा जाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र सिद्धार्थ विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त शोध बीज प्रोत्साहन नीति के अंतर्गत प्राप्त शोध परियोजना से सम्बंधित है। जो उक्त के अंतर्गत प्रकाशित किया जा रहा है।

बीज शब्द – आधुनिकता, उत्तर आधुनिकता, धर्मनिरपेक्ष राज्य, वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, सामाजिक निर्माण, वैश्वीकरण, उदारीकरण, वर्ग, पुनर्जागरण, औद्योगिक क्रांति, फ्रांसीसी राज्य क्रांति।

प्रस्तावना - पश्चिमी देशों और अमेरिका में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अंतःक्रियाओं के कारण आधुनिकता का विकास हुआ है। इन देशों के अन्य देशों के साथ आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध थे और इस प्रकार आधुनिक समाज पूरी दुनिया में मौजूद हो गया। क्रांतियों ने आधुनिकता को जन्म दिया और फिर आधुनिकता का विकास शुरू हुआ, कुछ ऐतिहासिक रूप से जटिल प्रक्रियाएँ जिन्होंने आधुनिकता के विकास को वैश्विक रूप दिया। धर्मनिरपेक्ष राज्य, वैश्विक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, सामाजिक निर्माण, वर्ग और श्रम का विकसित विभाजन ऐसी प्रक्रियाएँ रही हैं। जिन्होंने आधुनिकता के विकास को नई धार दी है। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता है कि आधुनिक समाज का उदय कब हुआ, परन्तु यह स्वीकार किया जाता है कि इस समाज की शुरुआत 15वीं-16वीं शताब्दी से होती है। जिस अर्थ में आज हम आधुनिक समाज को समझते हैं, वह वास्तव में पुनर्जागरण या ज्ञानोदय से उत्पन्न हुआ है। इसके बाद औद्योगिक क्रांति, फ्रांसीसी राज्य क्रांति हुई। क्रांति की कुछ विशेषताएँ आधुनिक समाज में निहित हैं, दूसरे शब्दों में, आधुनिक समाज कई क्रांतियों का उत्पाद है।

आधुनिकता से अभिप्राय- मैक्स वेबर के अनुसार आधुनिकता व्यक्ति और समाज की सदा-वर्तमान प्रकृति की स्पष्ट स्वीकृति है। आधुनिक अस्मिता अतीत में की गई अस्मिता की संरचनाओं की एक श्रृंखला की अगली कड़ी नहीं है, बल्कि यह इन संरचनाओं के मूल में उपस्थित कारणों को उजागर करने की एक प्रक्रिया है। आधुनिकता एक प्रक्रिया है और इसलिए इसमें गतिशीलता है। यह केवल समाजशास्त्र या राजनीति विज्ञान में मौजूद नहीं है। यह मानव जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में देखा जाता है। वास्तव में आधुनिकता का प्रभाव सर्वप्रथम साहित्य और कला पर पड़ा। इसलिए इस प्रक्रिया को व्यापक कहा जाता है, यह व्यापकता इसका एक बहुत बड़ा लक्षण है। आधुनिकतावादी लेखक एक-दूसरे के विचारों से असहमत हैं, कुछ किसी तथ्य पर जोर देते हैं, तो कोई किसी पर जोर देते हैं। फिर भी आधुनिकतावादियों की इस आपसी असहमति के बावजूद निश्चित रूप से लोकतांत्रिक व्यवस्था, पूंजीवाद, औद्योगीकरण और धर्मनिरपेक्षता आधुनिकता की वैश्विक विशेषताएं हैं।

आधुनिकता के लक्षण :-

आधुनिकता का संबंध समय के परिवर्तन या परिवर्तन से है। यूरोप में इस युग की शुरुआत 16वीं सदी के आसपास हुई थी। वहां का समाज पारंपरिक था। पूरे यूरोप में सामंती व्यवस्था थी। उस काल के बुद्धिजीवियों और खनिज शास्त्रियों ने इस व्याख्या का विरोध किया, एक औद्योगिक क्रांति हुई और इसके साथ विज्ञान में एक क्रांति आई। इन सबके परिणामस्वरूप यूरोप और अमेरिका में आधुनिकता का प्रवेश हुआ। साम्यवाद का स्थान पूंजीवाद ने ले लिया और राजतंत्र की समाप्ति के कारण लोकतंत्र का विकास हुआ।

आधुनिकता की विशेषताएं :-

गिडिन्स मुख्य रूप से आधुनिकता की 6 विशेषताओं की व्याख्या करते हैं, उनके अनुसार ये 6 विशेषताएं आधुनिक समाज का निर्माण करती हैं जो इस प्रकार हैं:-

- उद्योगवाद
- पूंजीवाद
- राष्ट्र राज्य
- प्रशासनिक शक्ति (निगरानी)
- प्रतिबिम्ब समाज
- असन्निहितता

आधुनिकता के 4 स्तंभ

- तर्कवाद:* हर बात का प्रमाण चाहिए। चमत्कार नहीं, विज्ञान।
- मानववाद:* भगवान नहीं, इंसान सबसे बड़ा है।
- प्रगति में विश्वास:* कल आज से बेहतर होगा। विज्ञान और तकनीक से गरीबी, बीमारी खत्म होगी।
- एक ही सत्य:* पूरी दुनिया के लिए एक ही कानून, एक ही इतिहास, एक ही विकास का मॉडल। इसी को *महावृत्त* कहते हैं - जैसे समाजवाद, पूंजीवाद, राष्ट्रवाद।

जब आधुनिकता अत्यधिक विकसित हो जाती है, तो इसे **उत्तर आधुनिकता** कहा जाता है। उत्तर आधुनिकता ने भी भारतीय समाज में पैठ बना ली है। देश में राजनीतिक उथल-पुथल, अर्थव्यवस्था का पतन, एक नई पार्टी का उदय, जिससे आम जनता सीधे तौर पर जुड़ी हुई है, प्रौद्योगिकी का पूर्ण उपयोग, आधुनिकता के पर्यावरणीय परिणामों पर आवाज उठाना, ये सभी उत्तर-आधुनिकतावाद के लक्षण हैं।

आधुनिकता और उत्तर आधुनिकतावाद दोनों के दुष्प्रभाव हैं जो समाज में समस्याओं के रूप में दिखाई देते हैं। इन परिणामों को हम बढ़ते अपराध, बाल अपराध, वृद्धावस्था की समस्याओं, युवाओं में असंतोष, अलगाव, भ्रम गृहों के रूप में देखते हैं जहां समाज कार्य भी एक चुनौती है और इसकी भूमिका भी है।

आधुनिक समाज का पैमाना इस बदले हुए समाज पर लागू नहीं होता, समाज को समझने की स्थिति बहुत नाजुक दौर में है। इसीलिए शायद इस समझने की प्रक्रिया में उत्तर-आधुनिकतावाद की अवधारणा को कसाव नहीं किया गया है, यह अवधारणा बहुत लचीली है, इसकी उत्पत्ति का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। व्यवस्थित रूप से इस अवधारणा पर 1980 से काम शुरू हुआ है।

आधुनिकता में उपभोक्ता वस्तुओं की भरमार और विभिन्न जीवन शैली –

समाज कार्य और अन्य आधुनिक समाजों में वस्तुओं की कोई कमी नहीं है। सारा संसार एक बाजार है। देखते ही एक भाग की वस्तुएँ दूसरे भाग में पहुँच जाती हैं। जहां इन बातों में समानता है। विविधता भी है। इस तरह जीवन शैली भी व्यापक हो गई है। आदमी अपनी पहचान बनाए रखने की कोशिश करता है।

अब निजी जीवन पर दबाव कम हो गया है और निजी और सार्वजनिक जीवन के बीच की खाई कमजोर हो गई है। आधुनिक समाज में एक ओर सांस्कृतिक एकाधिकार, व्यक्तिवाद है तो दूसरी ओर शिक्षा और सार्वजनिक उद्यम इस जीवन में समानता लाने का प्रयास कर रहे हैं। वास्तव में आधुनिक समाज अपनी संरचना में जटिल हो गया है। **आधुनिकता भी नवीनतम है** कुछ समाजशास्त्री आधुनिकता को काल या समय से जोड़ते हैं। जिनके पास आज नई चीजें हैं, वे आधुनिक हैं, जिनके पास जितनी नवीनतम चीजें हैं, वे उतने ही आधुनिक हैं। कुल मिलाकर विचारधारा के अनुसार समय या काल आधुनिकता को नापने वाला फीता है।

वैश्वीकरण और इसके आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक पहलू आधुनिकता के चेहरे को आकार देते हैं –

आधुनिकता का सम्बन्ध वैश्वीकरण से है, प्रारम्भिक अवस्था में देखें तो वैश्वीकरण ही था जिसने आधुनिकता का पोषण किया। आज वैश्वीकरण का प्रसार और उसका प्रसार बहुत अधिक हो गया है। अब कई नई राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ उभरी हैं, जिन्होंने पूरे समाज को अपने आलिंगन में ले लिया है।

नए संदर्भ में आधुनिकता बहुआयामी हो गई है। साथ ही अनेक प्रकार के अनैतिहासिक संघर्षों की रचना हुई है। सबसे बड़ा संघर्ष परंपरा और आधुनिकता का है। अंत में, हम कह सकते हैं कि आधुनिकता को वैश्वीकरण की प्रक्रिया के साथ देखना होगा। क्योंकि आधुनिकता और वैश्वीकरण दोनों एक दूसरे के परस्पर पूरक हैं। वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण आधुनिकता के भाईबंध हैं –

आधुनिकता की व्यापकता वैश्वीकरण, उदारीकरण और निजीकरण में निहित है, आधुनिकता में पहला औद्योगीकरण है। आज इसमें कई और नए मूल्य जुड़ गए हैं। वैश्वीकरण उदारीकरण और निजीकरण को बढ़ावा देता है, इसलिए हम इन सभी मूल्यों को आधुनिकता का भाईचारा कहते हैं।

आधुनिकता एकाकीपन, प्रतिस्पर्धा और उत्तेजित असंतोष है –

आधुनिकता एक विशेष प्रकार की जीवन शैली है। इसमें पूरे समाज का चरित्र अजीब लगता है। हर कोई भागता नजर आ रहा है। भीड़ में भी वह अपने को बिल्कुल अकेला महसूस करता है। अकेलापन उसकी आदत बन जाता है। दिन रात भागदौड़ करने पर भी संतुष्टि नहीं मिलती, आधुनिकता की ये विशेषताएँ एकाकीपन, होड़ और असंतोष मनुष्य के मन की स्थिति को दर्शाती हैं।

उत्तर आधुनिकता का आशय -

उत्तर आधुनिकता सांस्कृतिक और ज्ञानमीमांसा की अवस्था है। परिणामस्वरूप, आधुनिक सामाजिक संस्थाएँ दब जाती हैं और वैश्विक समाज की दिशा की ओर ले जाने वाला युग आ जाता है।

उत्तर आधुनिकता का विश्वास है कि समाज का इतिहास प्रगति द्वारा नियंत्रित नहीं होता है। उत्तर आधुनिकता के बाद का समाज बहुत बहुलवादी और विविध है, इस समाज का विकास महान वृत्तांत द्वारा निर्देशित नहीं है।

उत्तर आधुनिकता जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, उत्तर-आधुनिकता समाज का विकास है। यह अवधारणा तेजी से आधुनिकता की जगह ले रही है। बीसवीं शताब्दी के मध्य में आधुनिकता की भव्यता रही है। कला और संगीत में कई नए आयाम आए, साहित्य में कई प्रयोग हुए और तकनीक का उच्च स्तर बना।

उत्तर आधुनिकता ने संपूर्ण 20वीं शताब्दी के गौरव के सामने कई ज्वलंत प्रश्न खड़े किए। इस अवधारणा ने शहर की गगनचुंबी इमारतों को बुलडोज़रों की नाक के सामने खड़ा कर दिया। कॉर्पोरेट पूंजीवाद को खतरे में डाल दिया गया है। कला के चमचमाते बाजारों को ध्वस्त कर दिया।

अब एक नई संस्कृति का अवतार उत्तर आधुनिकता के रूप में हो रहा है। यह नई संस्कृति लोकप्रिय संस्कृति है। यह लोकप्रिय संस्कृति शुद्धता से मुक्त है। यह अभिजात वर्ग से और कला के रूप से परे है। इसकी शैली अधिक रोमांचक, व्यंग्यपूर्ण और ग्रहणशील है।

उत्तर आधुनिकता की कई तरह से व्याख्या की जाती है, परिभाषाओं और उनके उद्धरणों से यह स्पष्ट है कि अवधारणा की कोई सर्वसम्मत परिभाषा नहीं है, सभी का अपना संदर्भ है, सभी लोगों का समाज, समाज कार्य और अन्य को देखने का अपना तरीका है। जो समाज में आधुनिकता के लक्षण हैं, इस आधुनिक समाज में बहुत तेज गति से बदलाव आया है। “उत्तर आधुनिकता आधुनिकता से मुक्ति दिलाने का एक रूप है। यह एक विखण्डित आंदोलन है। उत्तर आधुनिकता बहु-संस्कृतियों का निवास हो सकता है।” उत्तर आधुनिकता एक विशाल अवधारणा है जो ऐतिहासिक काल, नए सांस्कृतिक तत्वों और सामाजिक दुनिया के एक नए प्रकार के सिद्धांत को जोड़ती है।

उत्तर आधुनिकता की विशेषताएं : –

डेविड हार्वे ने अपनी पुस्तक 'कंडीशन ऑफ पोस्टमॉडर्निटी 1984' में उत्तर आधुनिकता के कुछ मुद्दों को रखा है जो इसके लक्षणों की व्याख्या करते हैं।

उत्तर आधुनिकता की संस्कृति –

उत्तर आधुनिकता एक सांस्कृतिक प्रतिमान है, यह सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ा है। मुख्य रूप से उत्तर आधुनिकता एक सांस्कृतिक अवधारणा है।

उत्तर आधुनिकता बहुआयामी है। उत्तर आधुनिकता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसने विविधता को समानता और एकता में बांध दिया। यह एक ऐसी संस्कृति है जिसमें बहुलता है, यह वैध वृत्तांतों को अस्वीकार करती है। उत्तर आधुनिकता विखंडन में से एक है और समानता से अधिक सुसंगत है। इसमें समाज विभिन्न प्रकार का होता है और किसी प्रकार की समानता नहीं होती।

उत्तर-आधुनिकतावादी प्रवृत्तियों –

आधुनिकतावादियों के अनुसार यह विचारधारा एक युग है, अर्थात् आधुनिक काल के जाने के बाद उत्तर-आधुनिक काल आया और इस नये काल ने स्वयं को समकालीन सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं से जोड़ लिया। इसके विपरीत दूसरी विचारधारा के अनुसार यह संस्कृति के विकास का तर्क देकर पूँजीवाद को बढ़ावा देने वाला पूँजीवाद का षड्यंत्र है। अंततः उत्तर आधुनिकता आधुनिकतावादी रूढ़िवाद के खिलाफ है।

उत्तर-महान वृत्तांत, महान भाषा और महान सिद्धांत के विरोधी –

उत्तर-आधुनिकतावादी लेखक जैसे उत्तर-ल्योत्तर और फौकॉल्ट उन सभी शैलियों का विरोध करते हैं जो महान हैं, चाहे वह भाषा, सिद्धांत या कथा हो। उत्तर आधुनिकता घटनाओं को स्थानीय स्तर पर देखता है, स्थानीय स्तर के कारकों द्वारा उनका विश्लेषण भी किया जाता है। इसका विश्लेषण, उदाहरण के लिए, स्थानीय संदर्भ में स्थानीय राजनीति के शक्ति संबंधों को देखता है।

उत्तर आधुनिकता मानता है कि भाषा का संबंध व्यक्ति से नहीं बल्कि शब्द से है, तो इसका परिणाम खंडित व्यक्तित्व में देखा जाता है, इसलिए यह विखण्डित व्यक्तियों को तैयार करता है; और वे पीछे मुड़कर नहीं देखते, न ही उनके पास आगे की दृष्टि होती है। एक पंक्ति में कहें- विखण्डित समाज और विखण्डित व्यक्तित्व। उत्तर आधुनिकता का महत्व स्थानीय राजनीतिक आंदोलनों और संघर्षों के अनुसार है। स्थानीय लोग आधुनिकता को उन पर थोपा गया ढांचा मानते हैं। वे इसे बोझ, बाहरी आक्रमण या उपनिवेशवाद का छोटा रूप मानते हैं। इसीलिए उत्तर आधुनिकता इन सभी बाहरी तत्वों को स्थानीय स्तर पर खारिज कर देता है।

यह विचारधारा किसी भी मुद्दे या घटना को व्यवस्थित ढंग से नहीं मानती। इसके आगे जो है उसे स्थायी रूप से हल करें, एक कमी जो जेम्सन का कहना है कि उत्तर-आधुनिकतावादी संस्कृति में कमी है। वस्तुतः यह संस्कृति सतही है।

उत्तर आधुनिकता द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, विशेषकर 1960 के दशक के बाद विकसित हुई विचारधारा है। यह आधुनिकता की आलोचना से जन्मी है। शब्द दिया फ्रांसीसी दार्शनिक *ज्याँ फ्रांस्वा ल्योतार* ने अपनी पुस्तक *The Postmodern Condition* (1979) में मानव सभ्यता के बौद्धिक इतिहास में आधुनिकता और उत्तर-आधुनिकता दो बड़े वैचारिक मोड़ हैं। ये केवल समय नहीं, बल्कि दुनिया को देखने के दो अलग-अलग चरम हैं। ल्योतार के अनुसार - "उत्तर आधुनिकता महावृत्तांतों के प्रति अविश्वास है।"

सत्य सापेक्ष है: कोई एक सार्वभौमिक सत्य नहीं है, हर समुदाय, हर संस्कृति का अपना सत्य है।

विविधता का सम्मान: एकरूपता के बजाय स्थानीयता, अल्पसंख्यक, हाशिये के लोगों की आवाज महत्वपूर्ण है।

विखंडन: इतिहास सीधी रेखा में आगे नहीं बढ़ता, वह टुकड़ों में बंटा हुआ है।

भाषा और प्रतीक का खेल: वास्तविकता भाषा से बनती है। मीडिया, विज्ञापन, इंटरनेट ही हमारी वास्तविकता गढ़ते हैं।

उपभोग और छवि: उत्पादन से ज्यादा महत्वपूर्ण उपभोग और छवि बन गई है।

आज हम दोनों के बीच जी रहे हैं। हम एक तरफ चंद्रयान भेजने की वैज्ञानिक आधुनिकता में हैं, तो दूसरी तरफ अपनी स्थानीय भाषा, जनजातीय पहचान और लोककला को बचाने की उत्तर आधुनिक चिंता में भी हैं।

इसलिए, आधुनिकता को पूरी तरह नकारना भी गलत है और उत्तर आधुनिकता को पूरी तरह अपनाना भी। समझदारी इसी में है कि तर्क और विज्ञान को बनाए रखते हुए, विविधता और स्थानीय आवाजों का भी सम्मान किया जाए।

निष्कर्ष – आधुनिकता एवं उत्तर आधुनिकता एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि एक दूसरे की अगली कड़ी है। आधुनिकता ने हमें अंधविश्वास, सामंतवाद और भाग्यवाद से निकालकर तर्क, विज्ञान, समानता, लोक तंत्र एवं प्रगति का रास्ता दिखाया। संविधान, विज्ञान और राष्ट्र – राज्य उसी की देन है पर जब उसी तर्क और विज्ञान ने उपनिवेशवाद, दो विश्व युद्ध, परमाणु बम और पर्यावरण का विनाश पैदा किया तब उसके वादे पर सवाल लगा। यहीं से उत्तर आधुनिकता जन्मी। इसने बताया कि विकास का कोई एक ही मोडेल नहीं हो सकता। दलित, आदिवासी, स्त्री, अल्पसंख्यक और स्थानीय समुदाय का अपना सच, अपना ज्ञान और अपनी पहचान है। उत्तर आधुनिकता ने केंद्र से ज्यादा हाशिये को, एकरूपता से ज्यादा विविधता को महत्वपूर्ण माना। आज का सच यह है कि हम दोनों के बीच जी रहे हैं। हम एक हाथ में चंद्रयान और A. I. आधुनिक वैज्ञानिकता रखे हुये हैं और दूसरे हाथ में अपनी बोली, लोकगीत, जैविक खेती और थारु संस्कृति जैसी उत्तर आधुनिक अस्मिता को बचाने की चिंता। अतः यह कह सकते हैं कि आधुनिकता को पूरी तरह नकारना आत्मघाती होगा और उत्तर आधुनिकता को पूरी तरह अपनाना दिशाहीन बना देगा।



संदर्भ ग्रन्थ:

1. रोसें, स्टेनली: स्पिनोजा वेनेडिक्ट, इतिहास का राजनीतिक दर्शन, 1987, (सम्पादित) स्ट्रास और जोसेफ क्रोपसी, शिकागो, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
2. रहे, पॉल.ए: मेकियेवेली लिबरल रिपब्लिकन लिगेसी, कैम्ब्रिज और न्यूयार्क, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. बौडलेयर, चार्ल्स: द पेंटर ऑफ मॉडर्न लाइफ एंड अदर एस्से, 1964, जोनाथन मेन (अनु० सम्पादित) फैदन प्रेस, लन्दन।
4. बोमेन, जिग्मंतु: आधुनिकता और प्रलय, 1989, पौलिटी प्रेस, कैम्ब्रिज।
5. रोसें, स्टेनली: स्पिनोजा वेनेडिक्ट, इतिहास का राजनीतिक दर्शन, 1987, (सम्पादित) स्ट्रास और जोसेफ क्रोपसी, शिकागो, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।
6. रहे, पॉल.ए: मेकियेवेली लिबरल रिपब्लिकन लिगेसी, कैम्ब्रिज और न्यूयार्क, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. इस्सर, देवेन्द्र: उत्तर आधुनिकता: साहित्य और संस्कृति की नई सोच, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली, 2012।
8. बर्लिन, एन: टेफिक ऑफ ऑवर स्टेज, व्हाय वेटिंग फॉर गोडोट ?, द मैसाचुसेट्स रिब्यू में (1999), ऑटम।
9. विमल, गंगा प्रसाद: आधुनिकता और उत्तर आधुनिकता, नई किताब, दिल्ली।
10. सिंघल, बैजनाथ: उत्तर आधुनिकता, स्वरूप और आयाम, हरियाणा, साहित्य अकादमी, पंचकूला।
11. तौलिमन, स्टीफन एडेलस्तान: कोस्मोपोलिस 1990, आधुनिकता का गुप्त एजेंडॉ, फ्री प्रेस न्यूयार्क।